अध्याय – 4

शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक व्यंग्य

अध्याय – 4

शरद जोशी के नाटकों में सामाजिक व्यंग्य

भूमिका :–

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य के सामाजिक जीवन के कुछ पहलू होते हैं। मनुष्य में कुछ न कुछ कमी होती है। उसमें कुछ दोष या अभाव भी दिखाई देते हैं। सामाजिक संरचना के विविध स्तर दिखाई पडते हैं। स्त्री और पुरुष समाज के दो महत्वपूर्ण घटक हैं। नाटककार शरद जोशी ने जिस प्रकार अपने दो नाटकों में राजनीतिक व्यंग्य को चित्रित किया है उसी प्रकार उन्होंने सामाजिक व्यंग्य को भी दर्शाया है। सामाजिक व्यंग्य में सामाजिक विषमता, चिंतक, कलाकार, मानव और पशु, प्रजा की हालत, रोटी, इज्जत आदि का सवाल तथा अंधा आशावाद, अंधी प्रामाणिकता, सामाजिक दायित्व आदि विषयों को लेकर व्यंग्य को अभिव्यक्त किया है। विवेच्य नाटकों में नाटककार द्वारा सामाजिक व्यंग्य की विविधता का विवेचन–विश्लेषण करना इस अध्याय का मुख्य प्रतिपाद्य है।

सामाजिक स्तर :–

शरदजी के "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में समाज के चार मुख्य स्तरों के लोगों का चित्रण समाविष्ट है। इस नाटक के पात्र अलग–अलग स्तर के हैं। यथा – 1)नवाबी समाज, 2) नौकरशाही, 3) निम्न कामगार वर्ग, 4)कलाकार।

नवाबी समाज – नवाब

नौकरशाही – कोतवाल, दरबारी, चिंतक

निम्न कामगार वर्ग – जुग्गन धोबी, देवीलाल पानवाला, नागरिक, नत्थू दर्जी, रामकली इ।

कलाकार – सूत्रधार ।

अमीर से लेकर गरीब पात्र इस नाटक में समाविष्ट किये गये हैं।

"अंधों का हाथी" नाटक में चार अंधे ओर एक अंधी समाज के विभिन्न स्तरों के लोगों के परिचायक हैं। इन पाँच पात्रों के विविध रूप प्रसंग के अनुसार भिन्न भिन्न दिखाई पड़ते हैं। इस नाटक में सामान्यतया सामाजिक स्तर की दृष्टि से नेता, अफसर, क्लर्क, विशेषज्ञ, तथा साधारण समाज का सन्निवेश है। ये सब विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के निमित्त एक–दूसरे में जुड़ गए हैं और एक दूसरे से अलग भी हैं।

सामाजिक व्यंग्य (एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ)

नवाब का खानदान :–

शरद जोशी ने 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' नाटक में नवाब के खानदान का वर्णन किया है। इस वर्णन में नवाब के खानदान पर व्यंग्य किया गया है।

इस नाटक में कहीं–कहीं ऐसे भी प्रसंग दिखाई देते हैं कि जहाँ नवाब के राज्य के लोग कोतवाल, दरबारी, अन्य लोग नवाब के साथ–साथ नवाब के बुजूर्ग लोगों की भी खुशामद करते दिखाई देते हैं। असल में वे लोग नवाब के अतिरिक्त नवाब के पूर्वजों को पूरी तरह से जानते भी नहीं हैं। नवाब के राज के लोगों को नवाब के खानदान को अच्छी तरह से जानकारी भी नहीं है। फिर भी कुछ प्रसंगों में दरबारी लोग नवाब के साथ–साथ नवाब के बाप का, उनके बाप के बाप का, बाप के बाप के बाप के इतिहास का वर्णन बढ़ा–चढ़ाकर करते हुये दिखाई देते हैं। असल में नवाब का खानदान बहादुरी में मशहूर नहीं था। नवाब का खानदान नाचनेवाली औरतें, तवायफों में ही ज्यादातर मशगूल रहता था। नवाब के पिताजी ने भी गानेवाली बाई परी अपना सब कुछ निछावर कर दिया था। नवाब के खानदान ने राज के लिए कुछ भी ऐसा काम नहीं किया था जिससे समाज के लोगों को उनपर गर्व हो सके। नवाब के खानदान ने तो सिर्फ अपने राज में आराम ही आराम किया था। शराब, नाच–गाना में ही नवाब का खानदान डूबा था। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

कोतवाल : एक तरफ, एक तरफ देखते नहीं नवाब को ।

दरबारी – 1 : नवाब बहुत अच्छे नवाब हैं।

शेष दरबारी : नवाब बहुत अच्छे नवाब हैं।

दरबारी – 4 : बाप – के – बाप – के – बाप का इतिहास में जवाब नहीं। और सब खूबियों के अलावा वे बहादुर भी थे।

शेष दरबारी : बाप – के – बाप – के – बाप का इतिहास में जवाब नहीं। और सब खूबियों के अलावा वे बहादुर भी थे।[1]

वास्तव में नवाब का खानदान ऐसा है कि जिसमें न बहादुरी है, न अन्य उच्च गुण नवाब खानदान सुविधाभोगी था, इस पर नाटककार नें व्यंग्य किया है ओर यह संकेत दिया है कि स्वातंत्र्योत्तर काल के अनेक नेता, सत्ताधारी आदि के खानदान में देश–हित की गुंजाइश नहीं थी, सुख–सुविधा में ही जीवन बिताना उनका ध्येय था।

<u>नवाब की दानवीरता</u> :–

असल में नवाब दानवीर नहीं है। समाज नवाब की प्रशंसा करे इसलिए नवाब अपने गले में लटकने वाली छोटी माला किसी भिखारी, बेवा या कवि को देना चाहते हैं। नवाब कोतवाल से कहते हैं कि अगर कोई भिखारी, कोई बेवा या कोई शायर कवि हैं तो उन्हें हमारे सामने लाया जाएँ। हम उनका सम्मान करके या खुश होकर या दया करके हमारे गले की छोटी माला उन्हें दान करेंगे। यहाँ नवाब सच्चे दिन से दान नहीं करना चाहते हैं बल्कि इसलिए कि जनता उनके गुण गायेगी। इसी झूठी शान के लिए नवाब झूठा प्यार या झूठी दया जनता पर दिखाते हैं। नवाब के शब्दों में, " बच्चा जाने दे, कोई भिखारी, कोई बेवा या कोई कवि भी नहीं है? हम खुश होकर या दया करके उसे अपने गले का कण्ठा, खैर यह तो बड़ा है, मगर यह छोटीवाली माला उतारकर दे देंगे। जनता हमारे गुण गायेगी।"[2] यहाँ नाटककार ने भिखारी, बेवा या कवि पर भी व्यंग्य किया है कि ये तीनों सुख–सुविधा के लालच में डूबे रहते हैं। अतः इनको कोई चीज दान के रुप में देने से नवाब की स्तुति करेंगे। वास्तव में हमारे देश में दान की परंपरा महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। महाभारत का कर्ण दानवीर का उत्कृष्ट उदाहरण है, परंतु शरद जोशी का नवाब इसके विपरीत है। दान में दान देनेवाले व्यक्ति में जो श्रध्दा, भक्ति, आदर, अतिथि का मान–सम्मान आदि आवश्यक होता है, नवाब में इसकी पूरी तरह से कमी है।

चिंतकों का समाज :-

शरद जोशी ने यहाँ चिंतकों पर भी व्यंग्य किया है। ये चिंतक मुख्य बातों पर चिंतन करने के बजाय किसी फालतू बातों पर ही चिंतन करके कैसे वक्त खराब करते हैं। ऐसे मूर्ख चिंतकों पर शरदजी ने कसकर व्यंग्य किया हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

चिंतक – 1 : क्या हम यहाँ समय से पहले आ गये ?

चिंतक – 2 : नहीं। समय यहाँ हमारे पहले आ गया होगा।"[3]

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक के ये तीन चिंतक हैं। वे नवाब के लिए काम करते हैं। वे चिंतक हमेशा किसी भी बात को लेकर उन पर सोच–विचार करते रहते हैं। इनती छोटी छोटी और बकवास बातों पर भी ये तीन चिंतक हमेशा अपना समय व्यस्त करते रहते हैं। असल में चिंतकों का काम होता है कि समाज में या राज्य में जब कुछ कठिनाइयाँ आ जाती हैं तब उन पर विचार करना, उनके जवाब ढूँढना। मगर ये चिंतक तो ऐसी बातों पर कभी भी नहीं सोचते। वे भी अपनी नौकरी कायम रखने के लिए नवाब की झूठी प्रशंसा करते रहते हैं। नवाब के हाँ में हाँ मिलाते रहते हैं। चिंतकों का काम राज्य के लोगों के बारे में सोचना ही होता है, मगर इन चिंतकों ने कभी भी लोगों के लिए, राज्य के लिए अच्छी बातों पर नहीं सोचा था। आज भी समाज में चिंतकों जैसे ऐसे कई नेता, मंत्रियों के नौकर पी.ए. हैं उनका काम होता है कि समाज को सुधारना। उसमें से सभी बुराईयों को दूर करना। लोगों की परेशानियाँ दूर करना, उनकी सुविधा करना। लेकिन ये लोग भी समाज की तरफ मुँह मोड के सिर्फ नेता, मंत्रियों के ही गुणगान गाते रहते हैं। अपनी तरक्की के लिए ही ये सोच–विचार करते रहते हैं। यही व्यंग्य शरद जी ने दिखाया हैं।

कलाकारों की उपेक्षा :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में शरद जी ने सूत्रधार के बारे में बताया है आज भी हमारे भारत देश में जो संस्कृति से सुसंपन्न वहाँ सूत्रधार जैसे लोगों की उपेक्षा दिखाई देती है। यहाँ सूत्रधार का अर्थ है नाटक का रंगकर्मी। नाटक में समाजका ही सच्च

चित्रण दिखाया जाता है। नाटक को समाज का दर्पण भी कहते हैं। नाटक रचने के लिए या तैयार करने के लिए सूत्रधार दिन–रात मेहनत करते हैं, गाँव–गाँव, शहर–शहर घूमकर समाज का सच्च चित्रण नाटक में प्रस्तुत करते हैं। नाटक में समाज के व्यंग्य दिखाकर समाज के गुण–दोष भी दिखाते हैं और ऐसे समाज को हमारे देश के लोग उपेक्षा की नजर से देखते हैं। उनको इज्जत भी नहीं देते, उनकी उपेक्षा करते हैं। उनको अपमानित भी करते हैं। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

कोतवाल : सहसा चौंककर

हुजूर ।

नवाब : बोलो – बोलो ।

कोतवाल : वह देखिए, एक थिएटरवाला चला आ रहा है।

नवाब : थिएटरवाला ? यह क्या चीज है?

कोतवाल : बहुत खतरनाक शख्स है हुजूर । रंगकर्मी । जिसे कहते हैं नाटकों का सूत्रधार ...

नवाब : खतरनाक है तो साले को मारो जूते ।[4]

नवाब सूत्रधार के गुण गाने के बजाय उसको जूते मारने की बात करते हैं उसे गालियाँ देते हैं। आज ऐसी ही स्थिति अपने भारत देश में सूत्रधार के बारे में शरदजी ने दिखाई है।

आज भी समाज के लोग नाटक के सूत्रधार को, कलाकारों को घृणा की नजर से देखते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं, उनके अभिनय के गुण गाने के बजाय कलाकारों के बारे में गंदी–गंदी बातें करते हैं। सूत्रधारों को, कलाकारों को उनकी कला या अभिनय क्षमता की दाद देने के बजाय समाज के लोग उनकी बदनानी करते हैं। यही समाज के लोग नाटक को बदनाम करते हैं और उनमें काम करनेवाले लोगों को बदनाम करते हैं। असल में नाटक के सूत्रधार, कलाकार अपने विचार, अभिनय से दर्शकों को समाज का सच्चा दर्शन, सच्चा जीवन दिखाने की कोशिश करते रहते हैं। वे अपने विचार, अभिनय कला से समाज में सुधार करना चाहते

हैं। ऐसे ही सुधारवादी लोगों को समाज गालियाँ देता है। सूत्रधार की उपेक्षा कलाकार की उपेक्षा है, इस पर नाटककार ने व्यंग्य किया है जो बड़ा ही मार्मिक है।

<u>नाटक के प्रति वितृष्णा</u> :-

नाटककार शरद जोशी ने "अंधो का हाथी" नाटक के जरिये आज समाज के लोग नाटक को जितना महत्व देना चाहिए उतना नहीं दे रहें हैं, यह बताया है और यह भी व्यंग्य किया है कि आज नाटक की कितनी बुरी हालत है। निम्नांकित वार्तालाप से यह स्पष्ट हो जाता है।

अंधा – 3 : लकड़ी मंच पर ठोककर
क्या यही मंच है?

अंधा – 4 : इतना खालीपन, ऐसा सुनसान और कहाँ होगा? मुझे लगता है मंच यही हैं।[5]

रंगमंच पर प्रविष्ट पाच अंधे पात्रों के बातचीत के द्वारा शरदजी ने हमें यह दिखाया है कि लोग नाटक को ज्यादा महत्व नहीं देते। रंगमंच को वे व्यंग्य की दृष्टि से देखते हैं। पात्रों की ओर वे लोग घृणा, तिरस्कार की नजर से देखते हैं। आजकल समाज में नाटक या रंगमंच का कोई महत्व नहीं रहा है। उनकी तरफ आदर की नजर से कोई देखता नहीं है। पुराने जमाने में जो कीमत नाटक को या उसके कलाकार को मिलती थी वह कीमत आज नाटक को नहीं मिल रही है। इस नाटक के द्वारा शरदजी ने यह दिखाया है कि आज समाज में पुराने जमाने से चली आयी कला की उन्नत्ति होने के बजाय उसकी अवनति हो रही है। जो मानसम्मान कलाकारों को मिलना चाहिए वह मिल नहीं रहा है बल्कि उनकी निंदा ही हो रही है।

आजकल के लोग नाटक भी नहीं देखते, कला का आनंद भी नहीं लेते। सच यही है कि नाटक में समाज का सच्चा चित्रण रहता है, नाटक में समाज का वास्तवादी चित्रण रहता है, ये सब लोगों को देखना चाहिए। और उन्हीं से अपने गुण–दोषों का परीक्षण या आत्मनिरीक्षण, समाज का निरीक्षण करना चाहिए, परंतु आज समाज नाटक और उसके रंगमंच का अपमान करते नजर आते हैं। दर्शकों की नाटक के प्रति वितृष्णा पर शरद जोशी ने व्यंग्य किया है।

रंगमंच की बुरी हालत :-

नाटककार शरद जोशी ने नाटक की बुरी हालत पर व्यंग्य किया है। अंधा – 1 के शब्दों में – "नहीं, शायद यह मंच नहीं है। तालियों की गड़गड़ाहट नहीं, स्वागत नहीं, जनता नहीं कुछ भी तो नहीं है यहाँ। मैंने तो मंच के विषय में बड़ी–बड़ी बातें सुन रखी थीं।"[6] आजकल सचमुच में रंगमंच की हालत बहुत ही खराब हुई है। आजकल लोग नाटक नहीं देखते, बल्कि पुराने जमाने में राजा–महाराजाओं में भी नाटक देखने की बहुत चाहत थी। पुराने जमाने में नाटक को बहुत ही महत्त्व था। नाटक में काम करने वाले सभी पात्रों को सम्मान, आदर की नजर से लोग देखा करते थे। जब पात्र रंगमंच पर प्रवेश करते थे तब लोग या दर्शक उनका स्वागत तालियों से, फूलों से करते थे। ऐसा स्वागत पुराने जमाने के लोग कलाकारों का करते थे। तो शरद जी ने इस नाटक में अन्धा – 1 पात्र के द्वारा आज नवसमाज में नाटक और रंगमंच की कितनी बुरी हालत हुई है। इसका सच्चा रूप दिखाने की कोशिश की है।

शरद जी एक ऐसे नाटककार हैं जिन्हें अपने नाटक के प्रति, कलाकार के प्रति बहुत ही श्रध्दा, प्रेम या आदर की भावना है। परंतु आजकल के समाज में नाटक की इतनी दयनीय दशा देखकर शरदजी को बहुत ही दुख होता है। शरद जी ने हमें यहाँ यह बताने की कोशिश की है कि नायक की ओर हम उसी भावना से देखें, जैसे पुराने लोग आदर भाव से देखा करते थे।

नाटक के नियम :-

नाटककार शरद जोशी ने "अंधों का हाथी" नाटक में नारी पात्र अंधी के माध्यम से नाटक के पुराने नियमों पर व्यंग्य कसा है। प्रस्तुत नाटक में अंधी नाटक के तीन नियमों पर प्रकाश डालती है। अंधी के शब्दों में – "पहला नियम, अपना चेहरा सदा जनता के सामने रखना।"[7] पुराने जमाने में अभिनेताओं/ अभिनेत्रियों को सूचना दी जाती थी कि रंगमंच पर पार्ट अदा करने समय दर्शकों की ओर पीठ नहीं दर्शानी चाहिए। लेकिन आजकल हम यह देखते हैं कि इस नियम का पालन नहीं किया जाता है। नाटक में प्रयुक्त प्रसंग के अनुसार अभिनेता / अभिनेत्री अभिनय कर सकती है। चेहरा दिखाना न दिखाना. उस समय के प्रसंग पर ही निर्भर

करता है। आज नाटक के रंगमंच के पुराने नियम ज्यों के त्यों नहीं हो सकते, इस बात पर व्यंग्य है।

उपर्युक्त नियम में और एक व्यंग्य किया है। विश्व एक रंगमंच है ओर उस रंगमंच पर क्रिया–व्यापार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अभिनेता या अभिनेत्री है। नाटक में प्रयुक्त पाँच अंधे वास्तव में पाँच नेतागण भी हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो हम यह कह सकते हैं कि ये अंधे नेता इलेक्शन के समय ही अपना चेहरा जनता को दिखाते हैं और तत्पश्चात जो गायब होते हैं, फिर दूसरे इलेक्शन के समय ही अपना चेहरा दिखाते हैं। अतः यहाँ जनता को चेहरा दिखाने पर मार्मिक व्यंग्य है।

अंधी के अनुसार दूसरा नियम इस प्रकार है – "आवाज़ इतनी ऊँची रखना कि माइक की जरुरत न पड़े और दूर तक जाए।[8] वस्तुतः आज का अभिनेता या अभिनेत्री के लिए ऊँची आवाज रखने की जरुरत ही नहीं है। आजकल नाटक की प्रस्तुति में माइक का भी उपयोग किया जाता है। अतः यह आवाज़ संबंधी पुराने नियम की खिल्ली उडाई गई है।

जैसे हम अंधों के लिए लाठी होती है, वैसे वक्ताओं के लिए माइक रहता है। और अगर जरासी गडबडी हुई, तो ये लोग माइक पकड लेते हैं ओर इस माइक से ही उन वक्ताओं में आत्मविश्वास बना रहता है। वस्तुतः पात्रों की बातचीत से शरदजी ने नेता लोगोंपर तीखा व्यंग्य किया है। नेता लोगों को बोलना नहीं आता फिर भी वे खुद को अच्छे वक्ता साबित करने की कोशिश में लगे रहते हैं और लोगों को झूठे आश्वासन देते रहते हैं। कभी–कभी ये नेता लोग इतना बोल जाते हैं, इतना बोल जाते हैं कि उनके बोलने से, उनके आश्वासन देने से वे स्वयं ही संकटग्रस्त बन जाते हैं ओर स्वयं ही अपनी हानि के लिए जिम्मेदार बन जाते हैं। जिस प्रकार अगर कोई अभिनेता इतना ज्यादा अभिनय करने में मशगूल होता है कि वह स्वयं ही मंच से गिर पड़ने की संभावना रहती है। अंधी के अनुसार तीसरा नियम हैं – "बहुत आगे मत बढ़ना नही तो मंच से गिर पडोगे"[9] विशेष उल्लेखनीय है। कोई भी अभिनेता हो, उसे संयम के साथ अभिनय करना चाहिए, अन्यथा उसकी बुरी हालत हो सकती है। उसी प्रकार माइक के सहारे ज्यादा बोलने से वक्ता की भी हानि हो सकती है, इस बात पर यहाँ व्यंग्य किया गया

है। वस्तुतः नाटककार ने नाटक के पुराने नियमों की पुनर्व्याख्या की ओर संकेत दिया है जो नाटककार की नाटक कें नियमों के बारे में अपनी पैनी दृष्टि का ही भाव बोध है।

<u>परंपरा का पर्दाफाश</u> :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में परंपरा का पर्दाफाश किया है। समाज के हित के लिए परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह परंपरा कई प्रकार की होती है। इस परंपरा में कला के संवर्धन की परंपरा भी अग्रसर है। लोकेन आजकल परंपरा के नाम पर विपरीत बातें की जाती हैं। शरद जी ने इस नाटक में यही दिखाया है कि कई सालों से हमारे देश में राजनीति में समस्या पर विचार करने की प्रथा है जो आज भी चलती रही है। छोटी–छोटी बात पर ये राजनीति वाले चिंतन करने का नाटक करते हैं। हर एक आदमी की बुद्धि सोचने के लिए होती है फिर भी आम सामान्य व्यक्तियों को ये लोग सोचने के लिए कहते हैं। नौकर वर्ग भी अपनी नौकरी बनी रहने के लिए किसी भी बात पर कुछ भी राय देते हैं। चिंतन का यह प्रकार अजीब है। अपने मालिक वर्ग के सामने हाँ जी, हाँ जी करते रहते हैं क्योंकि वे मालिक इनके (नौकर वर्ग के) अन्नदाता होते हैं। इस संदर्भ में "परंपरा" पर ये चिंतक चिंतन करते हैं। उसमें भी उन तीनों चिंतकों का , निजी स्वार्थ भी हमेशा रहता है।

इस नाटक में कलाकर्म के संवर्धन के लिए उदात्त दृष्टिकोन अपनाने की परंपरा है[10] ऐसा चिंतक – 1 कहता है। वह इसलिए कहता है कि उसका कोई रिश्तेदार नाटक लिखता है उस नाटक पर भी उसे कुछ पुरस्कार या आर्थिक सहायता मिले। अपनी स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर आज का चिंतक चिंतन करता है। हमारे भारत देश में सालों से ही कला को महत्त्व दिया गया है कला को आगे बढ़ाने की परंपरा दिखाई देती है। कला संवर्धन पर व्यंग्य करते समय नाटककार ने नवाब के बाप पर भी व्यंग्य किया है। कलासंवर्धन के नाम पर नवाब के बाप ने भाँडों मण्डली को पूरे एक महीने मेहमान रखा था। और बड़ा इनाम–इकराम देकर उन लोगों को बिदा किया। ये राजनीतिक लोग सब अपने शौक पूरे करने के लिए ऐसे लोगों पर पैसा खर्च करते हैं, समय खर्च करते हैं। नवाब के बाप ने भी पटियाला से

आयी ठुमरी गानेवाली बाई पर सबकुछ निछावर किया था। उस पर बहुत पैसा खर्च किया था। इसके अतिरिक्त नवाब के बाप की गानेवाली के शरीर में भी रुचे थी। नवाब के बाप का उस नाचनेवाली के साथ अनैतिक रिश्ता भी था। उस वक्त बड़ी जोरदार चर्चा हुयी थी। ऐसी घटना आज के समाज में जो राजनीति के लोग हैं उनके बारे में भी होती है।

नाटककार शरद जोशी ने यह दिखाया है कि नवाब नाटक को बढ़ावा देना क्यों चाहते हैं क्योंकि परंपरा है। असल में वे खुद नाटक का महत्त्व नहीं जानते। नाटक में समाज का यही यथार्थवादी दर्शन रहता है यह भी नवाब को मालूम नहीं है। लेकिन कला संवर्धन बढ़ाने की परंपरा है, इसलिए वे नाटक को बढ़ावा देने को कहते हैं। नवाब सिर्फ परंपरा है इसलिए नाटक थियेटर को बढावा देना चाहते हैं। और खुद का अधिकार भी दिखाना चाहते हैं। नाटककार शरद जोशी यह दिखाना चाहते हैं कि आज के युग में भी लोगों को नाटकों का इतना महत्त्व मालूम नहीं है जितना आवश्यक है। नाटक को लोग सिर्फ मनोरंजन की नजर से ही देखते हैं। उसकी गहराई नहीं देखते कि नाटक में सच्चाई रहती है, उसमें जीवन का, समाज का यथार्थ चित्रण रहता है। ये महत्त्वपूर्ण बात लोगों के समझ में नहीं आती। आज भी नाटक को जितनी चाहिए उतनी प्रसिध्दि नहीं मिल रही है। इस संदर्भ में नवाब के विचार द्रष्टव्य हैं – "प्रजा का दिल बहलता है और इसमें सल्तनत का क्योंकर नुकसान होगा अगर इन्सान का दिमाग उलझा रहे इन बातों में, मसलन नाटक या गाने–बजाने की महफिलें या साहित्य तो हर्ज क्या है? इसलिए हम घोषणा करते हैं आज की तारीख कि बढ़ावा दिया जायेगा राज्य में थियेटर को। बजट में रुपया रहेगा, उसके लिए अकादमी कला परिषद वगैरा जो भी जरुरी है सब खुलेंगी जैसा कि होना चाहिए और होता रहा है चूँकि परंपरा है सो रहेगी।"[11] नवाब नाटक को सिर्फ लोगों के मनोरंजन की चीज समझते हैं। और कहते हैं कि नाटक से लोगों के दिल बहल जायेंगे। नाटक गाने बजाने की महफिलें या साहित्य में इन्सान का दिमाग उलझा रहने के लिए कोई हर्ज नहीं है, कोई नुकसान नहीं, ऐसे नवाब के विचार हैं। राज्य में भी थियेअर को बढ़ावा देते हैं, अकादमी, कलापरिषद सब खुलने की नवाब इजाजत देते हैं क्योंकि परंपरा हैं, इसलिए नवाब ये सब करते हैं। कला के बारे में नवाब के दिल में कुछ

अलग–सी जगह नहीं है, कुछ महत्त्व या आदर नहीं है। सिर्फ परंपरा होने के कारण वे नाटक को बढ़ावा देना चाहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि नवाब सत्ताधारी होने की नज़र से ही परंपरा को अक्षुण्ण रखना चाहते हैं। नाटक की कला क्या है इसके बारे में नवाब अनभिज्ञ हैं। वास्तव में यह परंपरा का दुरुपयोग और सत्ताधरी की सत्ता का घमंड है।

अलादाद खाँ गधा या मानव ?

शरद जी ने इस नाटक में मृत्यु पर और समान नाम होने पर व्यंग्य किया है। आज के जमाने में पशु और मानव का एक ही नाम रखने से कैसी व्यंग्यात्मक परिस्थिति निर्माण होती है यह दिखाया है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

"जुग्गन : कहाँ चला अलादाद –– मुझे छोड़कर तू कहाँ चला गया ? मैं हमेशा तेरे साथ रहा, जहाँ – जहाँ तू गया, वहाँ – वहाँ मैं गया। मगर आज –– ओ अलादाद –––

नत्थू : धीरज रख भाई जुग्गन। अरे आदमी हो या गधा, इस दुनिया में जो आया है, सो जायेगा। अमर कोई नहीं है प्यारे, अमर कोई नहीं है।"[12]

यहाँ जुग्गन धोबी का गधा मर गया है और जुग्गन बहुत रो रहा है तो उसका दोस्त नत्थू दर्जी जुग्गन को समझा रहा है। जुग्गन धोबी को बहुत ही दुख हुआ है क्योंकि जुग्गन धोबी के काम में गधा हमेशा साथ रहा था। जुग्गन के काम में अलादाद गधा बराबर का हिस्सेदार था। दोनों ही हमेशा एक साथ रहते थे, एक साथ ही काम किया करते थे। लेकिन अब वह गधा मर गया है। इसलिए उसकी याद में जुग्गन धोबी रो रहा है। इस समय गधा और मानव का उल्लेख बड़ा ही मार्मिक है। एक न एक दिन सबको इस दुनिया से जाना है, वह आदमी हो या गधा हो सबको इस दुनिया से जाना ही है। यहाँ शरद जी ने समान नाम पर व्यंग्य किय है। यहाँ आदमी के साथ–साथ गधे को भी महत्त्व दिया है। यहाँ व्यावहारिक बात बतायी है – आदमी के काम की चीज जब खत्म हो जाती है तो आदमी दुखी हो जाता है। वैसे ही अलादाद खाँ नामक गधा जुग्गन धोबी के बहुत काम का था मगर वो अब मर गया है। इसलिए जुग्गन धोबी बहुत दुखी होकर रो रहा है। नत्थू जुग्गन धोबी को समझा रहा है कि दुनिया में अमर कोई

नहीं रहता सबको इस दुनिया से जाना है। नत्थू जुग्गन धोबी को धीरज बाँधता है और कहता है – "असल मर्द वह है जो दुख में भी धीरज रखे।"[13] यहाँ नाटककार ने और एक व्यंग्य यह दिखाया है कि जुग्गन धोबी और नत्थू अलादाद खाँ नामक गधे को बहुत ही महत्त्व दे रहे थे बल्कि वह गधा नहीं कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति ही मर गया है ऐसा भी लगता है। आदमी को भी नहीं इतना गधे को यहाँ नहत्त्व दिया गया है। यहाँ यह भी व्यंग्य है कि कभी–कभी आदमी भी गधा बन जाता है। गधे की कहानी में गधा ही महत्त्वपूर्ण होगा और वह गधा और कोई नहीं मानव ही है। गधे का यह दोहरा व्यंग्य विशेष उल्लेखनीय है।

मानव से पशु बेहतर :–

शरदजी ने आज समाज में कैसे–कैसे व्यंग्य निर्माण हो रहे हैं इसका चित्र इस नाटक के द्वारा हमारे सामने लाया है। आज समाज पशु को मानव से भी बेहतर मानने लागा है, आज पशु को मानव से ज्यादा कीमत, इज्जत मिल रही है। जुग्गन धोबी का गधा मर जाने पर वह अपने गधे को विशेष महत्त्व देता हैं :– "गधा था, मगर रिश्तेदारों से ज्यादा करीब था। मेरे लिए तो कलेजे का टुकड़ा था। नुरे–नजर दिल का दुलारा... ओ अलादाद।"[14] सूत्रधार आखिर में जुग्गन धोबी से ही पूछता है कि कौन है यह अलादाद खाँ ? तब जुग्गन धोबी उसे सबकुछ बता देता है। अपने गधे की बढ़ा–चढ़ाकर प्रशंसा करता है। तब सूत्रधार कहता है, "गधा था, मैं समझा तुम्हारा कोई रिश्तेदार मर गया।"[14–अ] तब जुग्गन धोबी कहता है कि गधा था मगर रिश्तेदारों से ज्यादा करीब था। मेरे लिऐ वही सबकुछ था। उस गधे के लिए जुग्गन धोबी कितने ऊँचे ऊँचे शब्दों का इस्तेमाल करता हैं – "दिल का दुलारा", "नूरे नजर" वगैरा।

शरद जी ने यहाँ आज के समाज का चित्रण किया है। आज के हमारे यांत्रिक युग में आदमी–आदमी पर भरोसा नहीं कर सकता। लेकिन प्राणियों पर भरोसा कर सकता है। यही बात नाटककार ने जुग्गन के नाध्यम से बताई है। जुग्गन धोबी का गधा मर जाता है इसलिए वह बहुत दुखी होता है। रो–रोकर जमीन–आसमान एक करता है क्योंकि वह गधा हर काम में जुग्गन धोबी की मदद करता था।असल में गधे के ऊपर ही धोबी का धंधा चालू था।अपनी पीठ

पर कपड़े ढोकर घाट से घर तक चलता था। जुग्गन के माध्यम से नाटककार यह कहना चाहता है कि आज कल मानव एक दूसरे से नफ़रत करता दिखाई देता है। लेकिन गधा एक ऐसा पशु है जो मानव से बेहतर है। इसीलिए तो आज कल मानव की अपेक्षा पशु की प्रशंसा की जाती है।

पुरुषनीति :–

वास्तव में स्त्री और पुरूष के मेल से ही समान बनता है। लेकिन कभी–कभी यह भी देखने को मिलता है कि अगर कोई एक पुरुष स्त्री को सुंदर कहता है तो दूसरे अन्य पुरुष उसकी सुंदरता के बारे में अपनी अपनी डफली बजाते नज़र आते हैं। "अंधो का हाथी" नाटक के पात्रों के जरिए आज की पुरुष नीति पर नाटककार ने व्यंग्य कसा है ओर एक–दूसरे के दोषों पर अंगुली निर्देश किया है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए –

"अंधा – 3 : जरा सोचो, एक अंधी स्त्री को सुंदर अंधी स्त्री होना कैसा लगता होगा?

अंधा – 2 : जैसे एक मूर्ख को अपने बुध्दिमान होने की सूचना मिलने पर ।

अंधा – 4 : जैसे एक नपुंसक को अपने घर पुत्र जन्म का समाचार मिलने पर।"[15]

इस नाटक में नाटककार ने छोटे–छोटे वाक्यों में व्यंग्य करके इस समाज में चल रहे कार्यों को वर्णन किया है। समाज में जो कुछ भी चल रहा है, वह सब बकवास है। सब लोग खुद का ही कार्य करने में मशगूल हैं। एक आदमी दूसरे आदमी को ताने देने के लिए ही उत्सुक रहता है। ये सभी खुद के दोष नहीं देखते, बल्कि दूसरों के दोष निकालते रहते हैं। एक–दूसरों के पैर खींचने में ही उनकी जिंदगी गुजर जाती है। समाज में भिन्न भिन्न विचारों के लोग रहते हैं, इनके विचार कभी एक–दूसरे से मिलते–जुलते नहीं है। इसी कारण उनका आपस में हमेशा झगड़ा होता रहता है। अपने स्वार्थ के लिए वह एक–दूसरों पर व्यंग्यात्मक ताने देते हैं और खुद का समाधान मानते हैं। सूत्रधार का अंधी को "सुंदर" कहाना अन्य अंधों को अच्छा नहीं लगता है। इन अंधों का नारी के प्रति अच्छा दृष्टिकोण नहीं है। एक–दूसरों के दोषों पर उंगली उठाना ही उन्हें अच्छा लगता है ओर नारी की भर्त्सना करना उनकी कार्यसिध्दि बन जाती है। "मूर्ख और बुध्दिमान" तथा "नपुंसक ओर पुत्रवान" शब्दों पर नाटककार ने व्यंग्य किया है

और जीवन की विसंगति को ही निर्देशित किया है।

पुरुषों की नारी पर निगाहें :-

"अंधो का हाथी" नाटक में चार अंधे ओर एक अंधी हैं। यह सब जानकारी सूत्रधार दर्शकों को देता है। "नाटक अच्छा बने इसलिए नायिका नहीं है बल्कि नाटक में थोड़ा रस भी रहना चाहिए न चाहें नाटक में हाथी न दिखे, लड़की जरुर दिखनी चाहिए।"[16] यहाँ नाटककार ने सूत्रधार के माध्यम से यह दर्शाने की कोशिश की है कि आज कल नाटक आदि में पुरुष पात्रों के साथ नारी पात्र आवश्यक है क्योंकि पुरुषों की नज़र हमेशा नारी की ओर आकृष्ट होती है। पुरुषों का यह स्वभाव ही बन गया है कि उनकी निगाहें हमेशा नारी की ओर जाति रहती हैं। विशेषतः नवयुवक युवती की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं। पुरुषों की नारी की ओर देखने की दृष्टि पर यहाँ व्यंग्य है। विशेष बात यह है कि नाटक का एक स्त्री–पात्र अंधा है। आँख वाले अंधी को देखें – वह भी व्यंग्य है।

कार्यालय : एक रोमान्स–स्थल :-

शरद जोशी ने "अंधों का हाथी" नाटक के जरिये आज का समाज कितना बिगड़ गया है इसका चित्रण किया है। अज समाज में नैतिक अधःपतन किस तरह होने लगा है, यह अंधे पात्रों के द्वारा दिखाकर समाज के ऐसे लोगों पर तीखा व्यंग्य किया है। निम्नांकित वार्तालाप देखिए –

"अंधा : आज शाम क्या कर रही हो ?

अंधी : कुछ नहीं, बिलकुल खाली हूँ ।"[17]

यह कहने पर अंधा – 1 अंधी के बालों से खेलता है, कंधे की गोलाई को छूता है और अंधा–4 दूर से चपरासी की तरह देखता रहता है। आजकल कार्यालयों में या संस्थाओं में कुछ ही पुरूष और महिलाओं के संबंध अच्छे, स्नेहपूर्ण होते हैं। तो कुछ ऑफिसर लोग अपने पी.ए. या स्टेनो की तरफ अच्छी नजर से नहीं देखते। कोई स्टेनो अच्छी या इज्जतदार होती है तो कोई स्टेनो अपनी इज्जत बेचकर पैसा कमाती है, कोई स्टेनो पैसों के लिए अपना सबकुछ ऑफिसर को दे देती है। आज के जमाने में नैतिक मूल्य कैसे नष्ट होते जा रहे हैं इसका

चित्र इन अंधें पात्रों की बातचीत से दिखाई देता है। आजकल कार्यालय में कार्यालयी कामकाज कम होता है और अफसर–स्टेनो आदि रोमान्स में ही अपना समय बिताते हैं। शरदजी ने यही दिखाया है कि कार्यालयों में अफसर लोगों में और स्टेनो में काम के बजाय रोमान्स ही चलता रहता है। काम को कम महत्त्व दिया जाता है। यहाँ एक ही स्टेनो पर चार–चार अफसर लोगों की नज़रें लगी रहती हैं। वे अफसर लोग काम कम करते हैं और लड़कियों की तरफ ज्यादा देखते हैं। आज कल की लड़कियों की तरफ वे लोग बुरी नज़र से देखते हैं। और आजकल की लडकियाँ भी थोड़े बहुत पैसों के लिए खुद को बेचती हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए :–

अंधा – 3 : लिखिए। हाथी एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। तुम मुझसे नाराज हो जूली ।

अंधी : नहीं जी ।

अंधा – 3 : हाथी एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। ... आज शाम को क्या कर रही हो ?

अंधी : बॉस ने रुकने को कहा है, उन्हें कुछ जरूरी लेटर्स भेजने हैं।...

अंधा – 3 : यह साला हमेशा बॉजी मारता है।"[18]

यहाँ नाटककार ने आज समाज में नयी पीढियों का कैसा अधः पतन हो रहा है, यह हमें इन पात्रों के द्वारा बताया है आज कल नई पीढ़ी के लिए घर की अपेक्षा कार्यालय ही रोमान्स–स्थल बन गया है इस पर व्यंग्य है।

सुखी प्रजा :–

नाटककार शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नवाब की प्रजा के बारे में जानकारी दी है। असल में नवाब की प्रजा सुखी नहीं है फिर भी वे झूठी तारीफ करते रहते हैं। यथा –

"दरबारी – 1 : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।

शेष दरबारी : नवाब की सल्तनत में चारों तरफ अमन है।

दरबारी – 2 : नवाब के राज में सब सुखी हैं।"[19]

नवाब के सब दरबारी नवाब की सल्तनत का गुणगान करते हुए दिखाई देते हैं। लेकिन सच देखा जाए तो नवाब की सल्तनत में कोई भी सुखी नहीं है। किसी भी तरफ अमन या शांति

नहीं है। किसी भी ओर कानून का पहरा नहीं है। लेकिन ये दरबारी लोग सिर्फ नवाब के डर से उनका गुणगान करते हैं। अपने–अपने स्वार्थ के लिए नवाब को सिर पर चढ़ाकर रखते हैं। अपने हित के लिए नवाब की झूठी प्रशंसा करते हैं। सल्तनत के बारे में कोई सच बोलेगा तो उस आदमी को सजा होने का डर है। इसलिए कोई भी सच नहीं बोल सकता है।

नाटककार ने इस संदर्भ में आज के युग का ही व्यंग्य दिखाया है। आज हमारे देश की भी यही हालत है। कोई भी सुखी नहीं है। सबकी अपनी–अपनी तकलिफें हैं। कितने लोग पढ़ लिखकर भी बेकार हैं। कानून भी समय पर मदद नहीं करता उल्टे झूठे लोगों को छोडकर सच बोलने वाले को ही सजा देता है। नेता लोगों को तो हमेशा अपनी ही कुर्सी की चिंता दिखाई देती हैं। वे समाज के हित में कभी नहीं सोचते। लेकिन इसी नेता लोगों से डरकर ही इनके नौकर वर्ग उन्हें बताते रहते हैं कि आपके शासन में सभी ओर अच्छा ही है। क्योंकि सच बोलने का अंजाम उन्हें मालूम है। क्योंकि सच बोलने पर ये नेता लोग अपने हित के लिए ही नेता लोगों के शासन में उनकी प्रशंसा करते हैं।

<u>परेशान जनता</u> :–

नाटककार शरद जोशी ने अपने नाटक "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" में नेता लोगों पर व्यंग्य किया है जो वास्तववादी है। नवाब के राज्य में साधारण जनता नवाब और उनके आदमियों से हमेशा परेशान नजर आती है। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए :–

"नत्थू : अजी हकिम अच्छा हो तो खुद दिल करता है कि इज्जत दी जाये।

नागरिक – 4 : आप भी ठीक फरमा रहे हैं।

नागरिक – 1 : मगर शिकायत कीजियेगा किससे ? है कोई सुननेवाला ?"[20]

नवाब के राज्य में सब लोग असल में परेशान और दुखी हैं। सबको चिंता है क्योंकि नवाब साहब और उनके आदमी सब गरीब लोगों पर जुल्म करते है। लेकिन ये गरीब लोग शिकायत किससे करेंगे क्योंकि जुर्म करनेवाला खुद नवाब ही है। इन लोगों के मन में नवाब के तिए कोई आदर नहीं है। झूठ–मूठ की इज्जत देते है। आज के नेता, मंत्री लोग जो हैं वे आम जनता पर जुल्म करते हैं, उनके कष्टों से खुद का पेट भरते हैं। गरीब लोगों को लूटना ही इन बड़े

लोगों का धंधा बन गया है। शासन करनेवाले लोगों का कर्तव्य होता है कि वे समाज के लोगों का दुख–दर्द सुनें। उनकी शिकायतें सुनें, उनकी सुविधा के लिए कुछ न कुछ करें, बेकार युवक वर्गो को नौकरी दिलवा दें। लेकिन ये बड़े लोग इनके काम फोकट में नहीं करते। सिर्फ उन गरीब लोगों को लूटते रहते हैं और उनका काम तो कुछ नहीं करते। और इनके खिलाफ जो कोई शिकायत करता है तो ये बड़े लोग उसका मुँह हमेशा के लिए बंद करते हैं। उसे कडी से कडी सजा देते हैं। नवाब के राज्य में साधारण जनता न सुखी है, न शांत है, वह हमेशा परेशान ही रहती है। बाहरी तौर से कोतवाल आदि नवाब के राज्य में प्रजा सुखी है, इस तरह का ढ़ोल पीटते रहते हैं, इस पर व्यंग्य है।

उपेक्षित अनपढ़ :–

नाटककार शरद जोशी आज हमारे देश में कितने लोग आज भी अनपढ हैं यह बताने की कोशिश करते हैं। कितने साल हुये है फिर भी आज भी हमारे देश में अनपढ लोगों की समस्याएँ कम नहीं हुई हैं। अनपढ़ लोगों की संख्या आज भी हमारे देश में ज्यादा ही है। पानवाले देवीलाल कथन द्रष्टव्य है – "छोडिए साहब, आप पान खाइए। आप बड़े लोगों की यही बात तो हमें पसंद नहीं कि एक बात के पीछे पड़ गये तो पड़ गये।"[21] नाटककार यह बताना चाहता है कि सच में पढ़े–लिखे या समझदार आदमी एक बात के पीछे पड़ जाते हैं तो पूरी जानकारी हासिल हो जाने के बाद ही उन्हें तसल्ली हो जाती है। लेकिन अनपढ़ या सामान्य आदमी के पास इतनी सोचने की बुध्दि नहीं रहती और उन लोगों को उसकी जानकारी हासिल करने की चाहत भी नहीं होती है। इस तरह शरद जी ने पढ़े–लिखे आदमियों और अनपढ़ आदमियों में फर्क दिखाया है। जो हमारे देश में कुछ ज्यादा ही दिखाई देता है। अनपढ़ हमेशा उपेक्षित ही रहते हैं ओर उनका उपेक्षित रहना ही व्यंग्यपूर्ण है।

भारत में भिखारी :–

शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में भारत के भिखारियों पर कड़ा व्यंग्य किया है। भारत एक ऐसा देश है जिसमें हर जगह भिखारी ही भिखारी दिखाई पड़ते हैं। भिखारी के भी भेद हैं – एक सचमुच भिखारी ओर दूसरे भिखारी न होने पर भी

प्रासंगिक रूप में भिखारी बन जाते हैं। दूसरे प्रकार के भिखारी ही वास्तव में ज्यादा खतरनाक होते हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए :-

कोतवाल : भिखारी जरूर होगा। भिखारी तो अक्सर होते हैं। अजी आप लोगों में से कोई भिखारी है ? नवाब साहब उसे मालामाल कर देना चाहते हैं। अरे, भई आप लोगों में से कोई भिखारी है ?

नवाब : कोई भिखारी है ?

शेष सारे पात्र : हम सभी हैं हुजूर ।[22]

वास्तव में शरद जोशी ने हमारे भारत देश की स्थिति का चित्रण किया है। इन भिखारियों की वजह से हमारे भारत देश की दुर्दशा हुई है। और यहाँ यह भी व्यंग्य किया है कि हमारे भारत देश के लोग लालची है, वक्त आने पर अमीर लोग भी खुद को भिखारी कहकर नवाब से दान की अपेक्षा करते हैं।

समाज की स्वार्थांधता :-

"अंधों का हाथी" नाटक में नाटककार शरद जोशी ने तीखा व्यंग्य किया है। इस नाटक के सभी अंध वास्तव में नेता लोग ही हैं ,जो एक ही स्वार्थ के कारण इकठ्ठा हुए हैं, हर किसी को कोई न कोई अपना स्वार्थ पूरा करना है। हाथी की तलाश के पीछे खुद की समस्या छुडाने की कोशिश में सब लगे रहे हैं। यहाँ लेखक ने सारी जनता पर भी व्यंग्य किया है मतलब बाबू, बीबी, मुन्ना, मुनिया, नेता अफसर वामन, बनिया, आदि लोगों पर उन्होंने व्यंग्य किया है। ये सब ऊपर से सीधे-सादे दिखते हैं, लेकिन अंदर से उनका मन बहुत ही खराब है। निम्नांकित गीत में अंधों की स्वार्थांधता सहज ही अनुमेय है :-

"अंधे
हम हैं अंधे
तलाश रहे हैं अपना हाथी
एक स्वार्थ के हम सब साथी
×

.... फँसे है फन्दे

अंधे

हम हैं अंधे ।"[23]

नाटककार ने यह दिखाया है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में आज भी समाज अंधा है। समाज का प्रत्येक वर्ग अपनी स्वार्थांधता में डूब गया है। उसे और किसी की समस्या की फिक्र नहीं है, बल्कि अपनी ही समस्या को हल करने के लिए वह स्वार्थी बन गया है। स्वार्थ और कुछ नहीं, एक सामाजिक अंधत्व हीं है। हाथी की तलाश में आज का समाज अपने स्वार्थ की तलाश में ही व्यस्त है। यही व्यंग्यातमकता है।

रोटी का सवाल :-

शरद जी ने इसमें गरीबी का चित्रण किया है जो खरा उतरता है। अपने देश में गरीबी पुराने जमाने से ही चली आयी है लेकिन फिर भी आज की स्थिति यही है कि गरीबी जैसी थी वैसी ही है। नागरिक 1 के शब्दों में : - "गरीब कहाँ शिकायत करने जायेगा ? उसके सामने दो रोटी का स्वाल, सुबह शाम रहता है। गुलशनपुर के पास उस रात झोपडों में आग लगी। तीस घर फूँक गये । बडा शोर था, मदद मिलेगी । मिली मदद ?"[24] नवाब के राज्य के लोग सब मिलक्र एक-दूसरे को नवाब और कोतवाल के बारे में शिकायत करते दिखाई देते हैं। नागरिक - 1 अपने मन के विचार बोलता है। वह कहता है कि गरीब लोगों का यहाँ कोई सुननेवाला नहीं है। हमारे सामने तो रोज ही रोटी का सवाल रहता है। वह नागरिक गुलशनपुर गाँव का है। एक दिन उस गाँव में आग लगने से तीस घर बरबाद हो गये। उनका जो कुछ या सब चलकर राख हो गया। इन लोगों ने शासन के पास शिकायत की। बहुत दंगा-फसाद हो गया। आखिर में गरीब लोगों का उनपर से विश्वास हट गया। कई सालों से आज तक ऐसी कई घटनायें हमारे समाज में घटती आयी हैं। लेकिन अन्याय के खिलाफ आवाज उठानेवाला कोई नहीं है। क्योंकि गरीबों का यहाँ सुननेवाला कोई नहीं हैं। नेता लोग हमेशा अपनी कुर्सी संभालने के लिए आम जनता के साथ झूठे वादे करते हैं ओर अपना काम हो जाने पर उन लोगों को भूल जाते हैं। नेता, मंत्री लोग हमेशा अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश में लगे

रहते हैं। आज स्वातंत्र्योत्तर भारत में भी गरीब किसी शासक या नेता के पास शिकायत करने नहीं जा सकता क्योंकि उसे दो वक्त की रोटी मिलना भी मुश्किल है। जनता की प्राथमिक जरूरते आज भी पूरी नहीं हो सकी है। रोटी का सवाल सबसे बडा सवाल है। देश को राजनीतिक स्वतंत्रता अवश्य मिली है, लेकिन सामाजिक स्वतंत्रता अभी तक एक प्रश्नचिह्न जैसी है।

गरीबी हटाओ :-

नाटककार शरदजी ने हमारे देश में कितनी गरीबी है उसका सच्चा चित्रण इस नाटक में किया है। कई सालों से हमारे लोग गरीबी हटाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन आज भी हमारे देश की गरीबी कम नहीं हुयी है बल्कि ज्यादा ही बढी हुई दिखायी देती है।

नवाब : एक बार, तुम्हें याद होगा चिंतको, हमने कह दिया, क्या कह दिया हमने कि हम तुम्हारी गरीबी हटा देंगे। बोल आये हम, गरीबी हटाओ।

चिंतक – 3 : वह तो आपका ऐतिहासिक भाषाण था श्रीमान ।

नवाब : आम लोग बडे खुश, नवाब साहब गरीबी हटायेंगे ।"[25]

समाज में जो नेता, मंत्री लोग होते हैं वे आम जनता को कैसे उल्लू बनाते हैं यही शरदजी ने इस नाटक में दिखाया है। उपर्युक्त प्रसंग में नवाब खुद ही उनके नौकरों को बताते हैं कि जनता को बेवकूफ कैसे बनाया जाय। और उनके नौकर भी यह बात नोट करते हैं। नवाब हमेशा जनता के साथ झूठ बोलते हैं कि अब हम गरीबी हटायेंगे। मगर गरीबी हटाने की नवाब साहब कभी भी कोशिश नहीं करते हैं। वे हमेशा लोगों में झूठी उम्मीदे जगाते हैं। और अपने चिंतकों को कहते रहते थे। गरीब लोगों में उम्मीद जगाना बहुत जरूरी है क्योंकि उन्हीं से हमारी कुर्सी सुरक्षित रह सकती है। यह सब नवाब हुकूमत चलाने के लिए ही करते हैं।

आज के नेता लोग भी इस नवाब की तरह ही आम जनता को बेवकूफ बनाने में हमेशा सतर्क रहते हैं। हमेशा नेता लोग भाषणों में झूठे वादे लोगों को देते रहते हैं और अपनी कुर्सी बचाने की कोशिश में कामयाब रहते हैं। "गरीबी हटाओ" इस देश की एक ऐसी समस्या है कि जो स्वतंत्रता के पचास साल बाद भी जैसी पहले थी वैसे आज भी है। विशेष बात यह

है कि इस देश में गरीब ज्यादा गरीब हो रहे हैं ओर अमीर तथा नेता ज्यादा अमीर या धनपति बन रहे हैं।

सभी भारतवासियों को मालूम है कि हमारा देश गरीब है परंतु देश को सुधारने की कोशिश कोई नहीं करता। कुछ सुधारवादो लोग सिर्फ गरीबी हटाओ, गरीबी पर अखबारों में, किताबों में लेख लिखते हैं लेकिन कोशिश कोई नहीं करता । हमारे देश के लोग बोलते ही रहते हैं कि गरीबी हटाओ । लेकिन हटाता कोई नहीं । आजकल "गरीबी हटाओ" एक मजाक बनकर रह गया है। नवाब के चिंतक लोन गरीबी के बारे में बोलते हैं और कहते हैं कि "हम लोग गरीबी पर लेख कभी भी लिख सकते हैं। उसमें जानकारी की क्या जरूरत।"[25–अ] इसीसे पता चलता है कि हमारा भारत देश कितना गरीब है। लेकिन गरीबी हटाने वाला कोई नहीं है, यही व्यंग्य नाटककार ने दिखाया है।

धूम्रपान :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नाटककार शरद जोशी ने हमारे देश में कितने लोग व्यसनाधीन हो गए हैं कितने लोग शराब पीते हैं, धूम्रपान करते हैं, जिसकी वजह से हमारी नयी पीढियाँ खराब हो रही हैं, कितने घर बरबाद हो रहे हैं, यह दिखाने की पूरी कोशिश की है। नागरिकों का निम्नांकित वार्तालाप द्रष्टव्य है :–

"नागरिक – 2 : लाओ दो पॅकेट सिगरेट और माचिस दे दो। शोक में दुकाने बन्द हो सकती हैं।

नागरिक – 4 : मुझे भी दे दीजिए , पैसे फिर ले लेना।"[26]

इस नाटक में शरद जी ने यही बताया है कि हमारे देश के में गरीबी के साथ–साथ लोगों को धूम्रपान करने की भी खराब आदत हैं। सरकार "धूम्रपान बंदी" लगाती है। फिर भी हमारे देश के ज्यादा लोग हर रोज बीड़ी, सिगरेट, पान, तंबाखू खाते रहते हैं। कुछ भी हो जाये लोकेन ये अपनी बुरी आदत नहीं छोडते हैं। इसी व्यसन से ही समाज में गंदगी, बीमारियाँ, फैलती हैं। आज दिल्ली कानून ने "धूम्रपान निषेध" का कानून बनाया है लेकिन कुछ फर्क नहीं पड़ा है।

उपर्युक्त संवाद से पता चलता है कि कुछ भी हो जाये लेकिन ये लोग बीड़ी, सिगरेट कभी नहीं छोड़ेंगे। देवीलाल पानवाला कहता है कि हुकम आ गया है कि दुकाने बंद की जाये, तो आपको सिगरेट, बीड़ी लेनी है, तो अभी ले लो। बाद में नहीं मिलेगी। और विशेष बात यह कि नागरिक भी अपने लिए सिगरेट, पान लेते हैं। इसलिए कुछ भी हो जाये ऐसे लोग अपनी गंदी आदत कभी नहीं छोड़ेंगे। धूम्रपान बंदी का सरकारी कानून ओर लागों की धूम्रपान करने की बढ़ती आदत पर नाटककार ने व्यंग्य किया है।

परिवार नियोजन :-

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नाटककार ने परिवार नियोजन पर बड़ा मार्मिक व्यंग्य किया है। नवाब आत्म-प्रशंसा के लिए हमेशा लालायित रहता है। वह बच्चों को इसलिए प्यार करना चाहता है कि लोग नवाब की प्रशंसा करे। नवाब का बच्चों के प्रतिबहुत प्यार है ऐसा लोगों को लगे। इस पर नवाब आज के परिवार नियोजन पर व्यंग्य करता हैं और कहता है :- "बच्चा ? नजर नहीं आ रहा । जब से ये परिवार नियोजन लग गया मालिक, तब से बच्चे बहुत कम हो गये।"[27]

इस नाटक में शरद जी ने ये भी दिखाया है कि भारत देश में जनसंख्या बढने के कारण हमारी भारत सरकार ने जो परिवार नियोजन का प्रचार किया है वो भी बेकार रह गया है। उसका परिणाम भारतीय लोगों पर कुछ भी नहीं हुआ है। अब भी भारत की जनसंख्या ज्यादा ही बढ़ती जा रही हैं।

इज्जत का सवाल :-

मानव की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह हमेशा इज्जत के बारे में सोचता रहता है। मध्यवर्ग के लोगों की तो यह धारणा रही है कि इज्जत है, तो सबकुछ है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक का सूत्रधार एक ऐसा पात्र है जो अपनी इज्जत को महत्त्व देता है। भारतीय नाट्य-परंपरा पुरानी है और उस जमाने में नाटक करने वालों को, विशेषतः सूत्रधार को महत्त्व दिया जाता था, उसकी इज्जत का खयाल किया जाता था। लेकिन आजकल सामान्य व्यक्ति भी सूत्रधार की इज्जत का महत्व नहीं देता हैं।अतः सूत्रधार विवश होकर अपना

दु:ख व्यक्त करता हैं : – "यह इज्जत रह गयी है हम नाटक करने वालों की। अब इस नत्थू दर्जी की औकात क्या? मगर जरा–सी बात सुनने को तैयार नहीं। कोई स्मारिका के लिए विज्ञापन माँग रहा हूँ, या टिकट बेचने की कोशिश कर रहा हूँ जो इस तरह भाग रहा है।"[28]

उपर्युक्त अवतरण से पता चलता है कि नत्थू जैसा सामान्य दर्जी भी सूत्रधार को क्या इज्जत देता है। नत्थू जैसे कई लोग हैं जो नाटकवालों को बिलकुल इज्जत के काबिल नहीं समझते। नत्थू जैसे कई आदमी हैं जो नाटकवालों से दूर भागना चाहते हैं। असल में वे आदमी नाटक और नाटककारों से बहुत नफरत करते हुए दिखाई देते हैं। बिना वजह के ही ये नाटककार ऐसे लोगों में बदनाम हुये हैं। यह दु:ख केवल सूत्रधार का ही नही, नाटक में काम करने वाले प्रत्येक रंगकर्मी की यही हालत है। आज के यांत्रिक युग में स्वयं मनुष्य ही यंत्र बन गया है। अत: वह किसी की भावना को बंदिस्त नहीं कर सकता, यही व्यंग्य है।

<u>मित्रता की अजीब रीति</u> :–

साधारणतया मनुष्य मनुष्य से ही मित्रता करता है या मित्रता हो जाती है। लेकिन नाटककार ने एक ऐसी मित्रता पर प्रकाश डाला है कि कभी–कभी आदमी आदमी की अपेक्षा किसी पशु से भी मित्रता से पेश आता है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नाटककार ने यह दर्शाया है कि जुग्गन धोबी की मित्रता गधे से थी। इसका प्रमुख कारण यह है कि वह गधा उसे हमेश उसके कार्य में मदद करता था । नत्थू दर्जी का मंतव्य देखिए :– सुबह से यह जुग्गन रो–रोकर आँसू की नालियाँ बहा रहा है। और ठीक भी है। उस पर जो गुजर रही है, उसका दिल जानता है। गधे अलादाद के अलावा उसका इस दुनिया में था कौन ?"[29]

नत्थू दर्जी जुग्गन धोबी का मित्र है। नत्थू चिंतित हैं क्योंकि सुबह से उसका मित्र जुग्गन रो रहा है, क्योंकी उस धोबी का "अलादाद खाँ" नामक गधा मर गया है। नत्थू दर्जी कहता है कि जुग्गन को दुख होना जरूरी हैं क्योंकि बेचारे को अलादाद खाँ के सिवाय इस दुनिया में और कोई नहीं था। जुग्गन धोबी के काम में वह गधा हमेशा मदद करता था। जुग्गन

धोबी का वह गधा सबकुछ था। जिस तरह ऐन तीज–त्यौहार के मौके पर किसी गरीब दर्जी की सीने की मशीन टूट जाये उसी तरह जुग्गन धोबी का गधा मर जाने पर जुग्गन की स्थिति हुयी है। गधे पर मित्रता का आरोप्ण जितना व्यंग्यात्मक है उतना ही यथार्थ है।

शरद जोशी ने "अंधों का हाथी" नाटक में हमें यह दिखाया है कि नेता लोग, मंत्री लोग जब खुद पर संकट आते हैं तो वे दुश्मन को भी अपना मित्र कहते लगते हैं। अपने संकट दूर होने के लिए वे दुश्मन की चापलुसी करने लगते हैं। भय के कारण अपने ही दुश्मन के साथ मैत्री करने के लिए तैयार होते हैं। अन्धा – 2 के शब्दों में – "हाथी, मैं तुम्हें अपने बराबर की शक्ति मानता हूँ। तुम्हारी और मैत्री और सहयोग का हाथ बढ़ाता हूँ। आओ हम गले मिलें।"[30]

नाटककार ने अंधा – 2 के दुश्मन के माध्यम से यह दिखाया है कि अब गायब हुआ हाथी उस पर हमला करेगा। इस पात्र के द्वारा शरद जोशी ने आज के नेता लोगों का सच्चा चित्रण किया है। आज के नेता लोग भी कुछ मुसीबत आने के बाद डरकर अपने ही दुश्मन के पास लाचारी से मैत्री का प्रस्ताव रखते हैं। हाथी शक्तिशाली जानवर है। अतः शक्तिशाली के साथ दुश्मनी करना उचित नहीं। इसलिए आज के नेता लोग शक्तिशाली दुश्मन के साथ मैत्री का प्रस्ताव रखते हैं और सहयोग बढ़ाना चाहते हैं। बिना सहयोग के जीना मुश्किल है। अतः एक शक्तिशाली दूसरे शक्तिशाली के साथ दुश्मनी करता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है, इसलिए पड़ोसी शक्तिशाली राष्ट्रों के साथ भी उसे मैत्री और सहयोग की आवश्यकता पर नाटककार ने व्यंग्य किया है क्योंकि हाथी एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या भी है।

सरकारी मुआवजा :–

नाटककार ने मुआवजे पर व्यंग्य किया है। जनाजा खत्म होने के बाद जब नवाब साहब को जुग्गन की चीख सुनायी देती है तो नवाब साहब पूछते हैं कि यह कौन है ? क्या बात है। तब नत्थू दर्जी नवाब साहब से कहता है कि जब से जुग्गन का अलादाद गुजर गया है तब से इन्होंने रो–रोकर अपना बुरा हाल किया है। तब नवाब कहते हैं कि हम ऐसा नहीं होने देंगे। हम किसी गरीब के साथ ऐसा अन्याय नहीं होने देंगे, कहकर पाँच हजार रूपयों की

थैली नवाब जुग्गन को देते हैं ओर कहते हैं कि उससे उसकी तकलीफ कम हो जायेगी।"[31]

शरद जी ने यहाँ दिखाया है कि जुग्गन धोबी का गधा मरने से उसका कोई घाटा नहीं होता बल्कि अंत में उसे बहुत पैसे मिलते हैं। परंतु इस "अलादाद खाँ" नाम की वजह से बेचारे अलादाद खाँ नाम के एक शख्स की मौत बिना वजह होती है। एक गधे की वजह से एक आदमी को अपनी जान गवानी पड़ती है तो इसी गधे की वजह से जुग्गन धोबी को बहुत पैसा मिलता है। जुग्गन धोबी को मिलनेवाले पाँच हजार रूपये वास्तव में नवाब के द्वारा उसे मिलने वाला मुआवजा ही है। जिस अलादाद खाँ नामक व्यक्ति की जान चली जाती हे, उसके घरवालों को कुछ नहीं मिलता, लेकिन जिस जुग्गन धोबी का अलादाद खाँ नामक गधा मर जाता है तो उसके मालिक को पैसे के रूप में मुआवज़ा मिलता है। सरकारी मुआवजों पर नाटककार ने व्यंग्य कसा है। साथ ही जुग्गन के पैसे के सांत्वन पर भी अप्रत्यक्ष व्यंग्य है।

अंधा आशावाद :-

आज के लोग कितने आशवादी हैं यह व्यंग्य नाटककार शरद जी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में दिखाया है। गरीब जनता बहुत ही आशावादी होती है, झूठी आशा, उम्मीदें लेकर ही वे अपना जीवन गुजारते हैं और नेता लोग उन्हीं गरीब जनता को झूठी आशा देकर, झूठे आश्वासन देकन उल्लू बनाते रहते हैं। निम्नांकित वार्तालाप देखिए :-

"नवाब : जो कि बहुत जरूरी है। उम्मीद जगाना ।

चिंतक - 1 : वह तो जगी रहनी चाहिए। इसी को तो आशावाद कहते हैं।

नवाब : पत्रकार आये पूछने । आप गरीबी कैसे हटायेंगे ? हमने कहा कड़ी मेहनत कीजिए, हट जायेगी। इतना-सा मुँह लेकर चले गये।"[32]

यहाँ नवाब हमेशा अपने चिंतकों को दूसरों को कैसे उल्लू बनाया जाय इस बात को सिखाते हैं। जब चिंतक नवाब से कहता है कि बड़ी उम्मीदें जाग गयी थीं लोगों में तो नवाब कहते हैं कि उम्मीद जगाना तो बहुत ही जरूरी है। आशा कभी भी मरती नहीं। जब नवाब से पत्रकार पूछने आते हैं कि आप गरीबी कैसे हटायेंगे, तो नवाब झट से बोल देते हैं कि कड़ी मेहनत कीजिए

गरीबी हट जायेगी, और हम भी यही सोच रहे हैं कि गरीबी कैसे हटा दीं जाय, प्लानिंग चल रही है, इसी काम में लगे हुए हैं हमारे लोग। पत्रकार निराश होकर , मुँह लटकाकर चले जाते हैं। इसके बारे में अखबारों में भी बड़ी चर्चा हुई थी। तो नवाब साहब कहते हैं कि यही मकसद था हमारा। हम भी यही चाहते थे कि सभी ओर हमारी चर्चा हो। हमें प्रसिध्दि मिले। और अपने आदमियों को वे एक उसूल की बाते कहते हैं कि हमेशा आम जनता को बेवकूफ बनाये रखो। अपना काम पूरा हो जाता है।

आज के मंत्री, नेता लोग भी यही चाहते हैं कि उनका नाम बार–बार अखबारों में आये, लोगों के जुबान पर आये। वे झूठी प्रसिध्दि के लिए लोगों को झूठे वादे करके झूठी उम्मीद देते हैं। लोगों को बेवकूफ बनाना अब इनका काम बन गया है। वस्तुतः जनता के खोखले आशावाद पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

अंधी प्रामाणिकता :–

समाज में जो झूठी प्रामाणिकता दिखाई जा रही है, उसी पर नाटककार ने तीखा व्यंग्य कसा है। अलादाद खाँ नामक एक शरीफ आदमी सच्चा प्रामाणिक होकर भी उसे खुद के प्राण खोने पड़ते है। आज समाज में सच्चे प्रामाणिक आदमी की कोई कीमत नहीं है। प्रामाणिक आदमी को लोग बदनाम करते हैं, उसकी जिंदगी बरबाद करते हैं। अलादाद खाँ की यह प्रामाणिकता देखिए : – 'मैं हमेशा बायें से चलता हूँ। क्यू में खड़ा रहता हूँ। सिपाही के हुक्म को कानून मानता हूँ। टैक्स चुकाता हूँ। रात के बाद घर से नहीं निकलता, बिना एप्लिकेशन कभी दफ्तर से जाता नहीं, माता–मलेरिया की रपट लिखाता हूँ। मर्दुमशुमारी में नाम देना नहीं भूलता, वोट डालता हूँ। पडोसियों की मौका मुसीबत मदद करता हूँ।"[३३] गरीब होना ही मानव का दोष है। क्योंकि निर्दोष होते हुये भी कोतवाल अलादाद खाँ को पकड़कर नवाब के सामने लाता है और नवाब उन्हें कहते हैं कि अपने राष्ट्र के लिए तुम्हें अपनी जान देनी पड़ेगी क्योंकि हमें लाश चाहिये। तब अलादाद खाँ कहते हैं कि मेरा कोई दोष नहीं । मैं एक शरीफ आदमी हूँ। मैं हमेशा राज्य के सभी नियम का पालन करता हूँ। मैंने कभी भी कोई नियम नहीं तोड़ा है। मैं समाज के सब कानून मानता हूँ। लेकिन ऐसा होते हुए भी नवाब उनकी बात

नहीं सुनते और अलादाद खाँ को मारने की आज्ञा करते हैं। अलादाद खाँ बिना वजह मर जाते हैं। शरीफ होने के कारण उन्हें अपनी जान देनी पड़ती है। "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में शरद जोशी ने यही दिखाया है कि आजकल शरीफों का जमाना नहीं रहा है। यहाँ नेक आदमी को कोई पूछता नहीं हैं, उसकी कोई कीमत नहीं है।शरीफ आदमी को कभी भी न्याय नहीं मिलता है और जो कोई अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है, उसकी आवाज हमेशा के लिये खामोश की जाती है। उसे खत्म किया जाता है। यही आज की भयानक स्थिति है। आज कल गरीब और शरीफ आदमी की यह दुर्दशा ही रही है कि उसकी सच्ची प्रामाणिकता का कोई महत्त्व नहीं रहा है, मानो सच्ची प्रामाणिकता अंधी प्रामाणिकता बन गई है।

अंधा फर्ज :-

नाटककार शरद जोशी ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में फर्ज पर व्यंग्य कसकर हमें सचेत किया है कि समाज के कुछ नेता लोग फर्ज के नाम पर आम आदमी को अपनी जान देने के लिए मजबूर करते हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए :-

"नवाब : .. तुम्हारे फर्जों में एक आखरी फर्ज जोडना है कि आज हमें, इस गवर्नमेंट को, मुल्क को तुम्हारी सख्त जरूरत है। तुम्हे जान देनी होगी अलादाद ! हम तुम्हें फर्ज की सबसे बड़ी ऊँचाई पर पहुँचायेंगे। हमें तुम्हारी लाश चाहिए अलादाद !

अलादाद खाँ : मगर मेरा कुसूर क्या है ?मैं .. मैं ... आप एक बेकसूर आदमी की जान कैसे ले सकते हैं?"[34]

इस नाटक के नवाब साहब खुद को मशहूर करने के साथ-साथ मुल्क में खुद की हुकूमत चलने के लिये बार-बार अलादाद खाँ को मुल्क के बारे में फर्ज की याद दिलाते रहते हैं।

अलादाद खाँ जब कहता है कि मेरा कसूर क्या है? आप एक बेकसूर आदमी की जान क्यों ले रहे हो? तब नवाब कहते हैं हमें सिर्फ तुम्हारी लाश चाहिए जिसे हम कंधा देंगे और सारे लोग ये नजारा देखेंगे ओर जनता हमारे गुन गायेगी।

आज हमारे देश में भी ऐसी ही स्थिति चल रही है । नेता लोग, मंत्री लोग अपने–अपने स्वार्थ के लिये किस–किस की बलि चढाते हैं ओर उन पर अपनी इज्जत बसते हैं। आज ऐसी ही स्थिति हैं कि "करता कुछ और है, भरता कुछ और है।" इस नाटक में शरद जी ने यही कहा है कि खुद तो नवाब राष्ट्र के लिये, मुल्क के लिये कुछ तो करता नहीं बल्कि निर्दोष अलादाद खाँ को बलि चढाकर उसे फर्ज निभाने को कहता है। यही व्यंग्य दिखाया है।

नेताओं की ऊपरी सहानुभूति :–

"एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में शरद जी ने नेता लोग कैसे ढोंगी रहते हैं, इसका चित्रण किया है। नेता लोगों का बर्ताव "मुँह में राम बगल में छूरी" जैसा रहता है। इन नेताओं को गरीब लोगों के बारे में कुछ सहानुभूति नहीं रहती लेकिन जनता को दिखाने के लिए वे ऊपरी सहानुभूति दिखाते रहते हैं। नवाब के शब्दों में :– "जानेवाले जाते हैं चूँकि उन्हें जाना है ओर वे जायेंगे मगर ऐसे मौको पर चाहे वे गरीब हो या अमीर किसी पोस्ट पर हो या रिटायर हो चुके हों, हमारा फर्ज बनता है कि हम अफसोस करें, तब जब वे जाने को हों या चले जायें। जैसे अलादाद खाँ।"[35]

नवाब साहब को यह जानकारी मिलती है कि राज्य में कोई अलादाद खाँ नामक एक शख्स की मौत हुई है तो नवाब झटसे कहते हैं कि हम उनके जनाने में शरीक हो जायेंगे क्योंकि इसीसे सारे लोगों में हमारे लिये इज्जत बढ़ेगी। हम अपना फर्ज निभायेंगे चाहे अलादाद खाँ अमीर हो या गरीब, किसी पोस्ट पर हो या रिटायर, हम उनके मौत पर अफसोस करेंगे तो जनता के दिल में हमारी इज्जत और ही बढेगी। हम जनता में मशहूर हो जायेंगे। जनता हमारी गुन गायेगी। अपने इस स्वार्थ के लिए ही नवाब अलादाद खाँ के जनाजे में अफसोस करना चाहते हैं। आज देश में यही चल रहा है ये दिखाने के लिए नवाब जैसे कई मंत्री, नेता लोग हैं जो लोगों में दुःख बाँटने जाते हैं तो उनके दिल में दया, करूणा के भाव नहीं रहते। वे अपनी ही स्वार्थ के लिये दुःख में हिस्सा लेने का नाटक करके गरीब लोगों में अपनी इज्जत बढाने की कोशिश में रहते हैं। नाटककार ने नेताओं की ऊपरी सहानुभूति पर व्यंग्य किया है।

समर्पण की व्याख्या :–

नाटककार ने "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" में समर्पण पर व्यंग्य किया है। कुछ गरीब, शरीफ लोगों को बिना कुछ गलती के अपनी जान की कुर्बानी देनी पड़ती है। नेता लोग खुद को ऊँचा करने के लिए गरीबों को सर्मपण करने के लिए मजबूर करते हैं। चिंतक–2 द्वारा। समर्पण की की गई व्याख्या व्यंग्यपूर्ण है :– "पूर्ण समर्पण और तन–मन–धन से सब कुछ भूलकर की गयी, सेवा मनुष्य को महान बना देती है।"[36] ये चिंतकगण अलादाद खाँ को उपदेश सुनाते हैं लेकिन खुद तो राष्ट्र की सेवा के लिए कुछ करते नहीं। दूसरों को बलि चढ़ाने के लिए मदद करते हैं। खुद की जान राष्ट्र के लिए नहीं देते। सिर्फ बेकसूर लोगों को शहीद होने के लिए कहते हैं।

इस नाटक के नवाब साहब के चिंतकगण अलादाद खाँ को राष्ट्र के समर्पण के लिए उपदेश देते हैं। जब अलादाद खाँ कहते हैं कि मुझे मत मारो, मैं मरना नहीं चाहता। तब ये चिंतकगण कहते हैं कि व्यक्ति का जीवन अपने राष्ट्र के लिए ही होता है, उसको तन–मन–धन से अपने राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए। सच्चे दिलसे सेवा करनी चाहिये। राष्ट्र के लिए व्यक्ति का जीवन होता है। व्यक्ति के लिए राष्ट्र नहीं होता। आदमी को अपना सब कुछ भुलकर राष्ट्र की सेवा करनी चाहिये। इसी सेवा से तो मानव महान बनता है।

नवाब के नौकर जबरदस्ती से ही अलादाद खाँ की जान लेते हैं और खुद को शरीफ आदमी समझते हैं। आज ऐसी ही स्थिति इस समाज में, इस देश में हैं। नेता लोगों के ऐसे कई चमचे हैं जो नेता, मंत्री लोगों के कहने पर किसी निर्दोष आदमी की जान लेते हैं। किसी बेकसूर आदमी को मार डालते हैं जिनके कसूर यही होते हैं कि वे प्रामाणिक इन्सान होते हैं, सच्चाई के मार्ग पर चलनेवाले होते हैं। यहाँ शरद जी ने यही दिखाया है कि आजकल सच्चाई का जमाना नहीं रहा है। झूठे लोगों का जमाना चल रहा है। सच पर झूठ विजय पा लेता है। और सारी गरीब जनता यह देखती रहती है। चिंतक 2 द्वारा समर्पण की की गई व्याख्या वास्तव में गरीब और नेक आदमी के शोषण का ही नया रूप है, सदाचार का गला घोटना है।

शव–यात्रा :–

कोई व्यक्ती मर जाने पर विधिवत शव–यात्रा निकाली जाती है। इस शव–यात्रा में साधारणतः मृत व्यक्ति के रिश्तेदार, पड़ोसी और अन्य मित्र आदि शामिल होते हैं। लेकिन आज बड़े लोग अपनी प्रसिध्दि के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होते हैं। अपना नाम कमाने के लिए वे कौनसे भी तरीके अपनाते हैं। नवाब का शव–यात्रा में शामिल होने का और कंधा देने का विचार बड़ा ही मार्मिक है। नवाब के शब्दों में :–"तय रहा कि गरीब का जनाजा जरा धूम से उठेगा। राजमहल से उठेगा जिसे कन्धा हम देंगे। दफ्तर दुकानें बन्द, स्कूलों को छुट्टी, रेडियों से सिर्फ सारंगी बिना तबले के बजेगी और मातमी बैंड के साथ जायेगा जनाजा अलादाद खाँ का कब्रस्थान तक । कंधा हम देंगे।"[39]

बड़े आदमी अपनी खुद की प्रसिध्दि के लिये क्या क्या करने को तैयार होते हैं, यही बात शरद जी ने बतायी है। इस नाटक के नवाब अपनी झूठी शान के लिए लोगों के मन में इज्जत पा लेने के लिए अलादाद खाँ नामक शख्स के जनाजे में जाकर उसे कंधा देना चाहते हैं, ताकि सब लोग यह देखे के एक बड़े नवाब एक गरीब आदमी के जनाजें में आये हैं और उन्हें कंधा भी दिया है। इससे तमाम आदमी के दिल में नवाब के प्राते आदर बढ़ जायेगा ऐसा नवाब सोचते हैं और कहते हैं कि इस बात की घोषणा की जाए और लोगों की भीड़ भी लगी रहे। जब हम जनाजे को राजमहल से कब्रस्तान तक कंधा देंगे तो सब जनता हमें देखे। इसलिए सभी दफ्तर–दुकाने बन्द करो, स्कूलों की छुट्टी करने के लिए कहते हैं। रेडिओ पर सारंगी बजाने को कहते हैं। और जनाजा भी बैंड के साथ कब्रस्तान जायेगा ऐसा कहकर अपने नौकर को उनकी काली अचकन प्रेस करने को भी कहते हैं ताकि वो जनाजे में पहन सकें। इसीसे समझ में आता है कि लोग झूठी शान के लिये क्या से क्या बनने की कोशिश में लगे रहते हैं। जो शव–यात्रा दुःख का प्रतीक है, वह शव–यात्रा आज एक फैशन बन गई है, एक औपचारिकता बन गई है और नवाब जैसे लोगों की गर्दन पर प्रसिध्दि का भूत सँवार हो जाता है। नाटककार द्वारा किया गया यह व्यंग्य जितना मार्मिक है, उतना ही उपरोधिक भी।

सामाजिक दायित्व से पलायन :–

"अंधों का हाथी" नाटक में शरद जोशी ने यह बताया है कि आज जमाना बिलकुल बदल गया है। पूराने जमाने के लोग नहीं रहे हैं। पहले लोग अपने देश के लिए समाज के लिए अपना सबकुछ त्याग देते थे। लेकिन आज के लोग समाज के लिए कुछ नहीं करते, समाज के प्रति नागरिक का जो कर्तव्य है वहनहीं निभा सकते। पहले के जमाने में त्याग ओर सेवा की परंपरा ही चली आ रही थी लेकिन आजकल यह त्याग, सेवा सबकुछ लाग भूल ही गये हैं। आज के लोग बहुत स्वार्थी हो गये हैं। आज कल नेता लोग समाज का दायित्व निभाने के लिए और उनकी समस्याएँ दूर करने के लिए बड़े बड़े आश्वासन देते हैं, घोषवाक्य जारी करते हैं, व्याख्यान देते हैं। लेकिन असल में लोगों की समस्याओं का हम करने में वे असमर्थ होते हैं। वे अपने विहित स्वार्थ के लिए समाज–सुधार के नारे लगाते हैं और सामाजिक समस्याओं को अधिक व्यापक बनाने में ही अपना समय बिताते हैं। ये नेता लोग अपनी असमर्थता स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करते, बल्कि जनसहयोग की अपेक्षा धरते हैं और बिना जनसहयोग के हम कुछ नहीं कर सकते कहकर अपने सामाजिक दायित्व से पलायन करते हैं। अंधा – 1 के विचार द्रष्टव्य है : – "जिम्मेदारी तो हमें सौंप दी पर आप मानते हैं बिना . सहयोग के यह कार्य संपन्न होना कितना कठिन है।"[38] महात्मा गांधी जैसे लोग नहीं रहे जिन्होंने अपने देश की आजादी के लिए खुद के प्राण बलिदान किये थे। लेकिन आज के समाज को अपने देश के प्रति जो कर्तव्य है वह कर्तव्य आज के समाज के लोग नहीं निभा रहे हैं। आज बापू जैसे कुछ लोग रहते तो आज बड़ी–बड़ी समस्याओं का हल निकल आता। तो आज के समाज की दयनीय दशा का चित्रण शरदजी ने दिखाया है। और आज के कर्तव्यविमुख लोगों का चित्रण दिखाया है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि –

1. नाटककार शरद जोशी ने प्रस्तुत नाटक. में सामाजिक व्यंग्य पर काफी प्रकाश डाला है।

2. नाटककार ने विवेच्य नाटकों में समाज के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर उन पर करारा व्यंग्य कसा है। विशेषतः नवाब का खानदान, चिंतकों का समाज और कलाकारों की उपेक्षा पर व्यंग्य किया गया है।

3. "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" नाटक में नाटककार ने मानव और पशु के अंतर को स्पष्ट करते हुये मानव से पशु बेहतर है, ऐसा दिखाया है।

4. आज के सरकारी कार्यालयों पर और उसमें अधिकारी और स्त्री वर्गके बीच चलनेवाले रोमान्स पर तीखा व्यंग्य किया गया है। और ये लोग कर्तव्य से कैसे विमुख होते हैं यह भी दर्शाया है।

5. नाटककार ने आज की जनता की विविध समस्याओं पर भी प्रकाश डालते हुये उनमें निहित दोषों पर प्रकाश डाला है।

6. सामाजिक दायित्व से पलायन पर व्यंग्य करने में नाटककार कामयाब हुआ है।

7. हिंदी रंगमंच के बूरी हालत पर भी नाटककार का ध्यान गया है और उसने नाटकों के पूराने नियामों पर आधुनिक जीवन संदर्भ में व्यंग्य कसा है।

8. संक्षेप में समाज के विभिन्न पहलुओं पर नाटककार ने जो व्यंग्य कसा है वह जितना हास्य निर्मिति में सहायक हुआ है उतना ही समाज सुधार में पथप्रदर्शक रहा है।

संदर्भ :-

1. दो व्यंग्य नाटक "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.13
2. वही,पृ.13
3. वही,पृ.37
4. वही, पृ.14
5. दो व्यंग्य नाटक – "अंधों का हाथी", शरद जोशी, प्र.संस्क., 1994, पृ.81
6. वही, पृ.81
7. वही, पृ.82
8. वही, पृ.82
9. वही, पृ.82, 83
10. दो व्यंग्य नाटक – "एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ" – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.15, 16
11. वही, पृ.19
12. वही, पृ. 24
13. वही, पृ. 24
14. वही, पृ. 27, 14 अ, वही, पृ.27
15. दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.87, 88
16. वही, पृ.80
17. वही, पृ.91
18. वही, पृ. 92
19. दो व्यंग्य नाटक – एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ – शरद जोशी, पृ.संस्क.1994, पृ.20
20. वही, पृ. 32
21. वही, पृ. 25

22. वही, पृ. 14

23. दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.86, 87

24. दो व्यंग्य नाटक – एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.32

25. वही, पृ.47

26. वही, पृ.53

27. वही, पृ.13

28. वही, पृ.24, 25

29. वही, पृ.23

30. दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी, शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.115

31. दो व्यंग्य नाटक – एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ – शरद जोशी, प्र.संस्क.1994, पृ.75

32. वही, पृ.47

33. वही, पृ.70

34. वही, पृ.71

35. वही, पृ.51, 52

36. वही, पृ.72

37. वही, पृ.48

38. दो व्यंग्य नाटक – अंधों का हाथी – शरद जोशी, प्र.संस्क. 1994, पृ.96